साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 47, अक्टूबर(द्वितीय) , 2018

डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अंग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' के हिंदी अनुवाद का अगला भाग

लेखक - डॉ० रिक लिंडल
अनुवादक - डॉ० अनिल चड्डा

गतांक से आगे

पाप से मेरी अपनी मुठभेड़

जब रिक्की इन मुद्दों के बारे में सोच रहा था, उसे लगा, शायद मैं पापी हूँ? क्या बर्तन केतली को काला कह रहा है? मैंने जानवरों को मारा है. जब मैं सत्तरह वर्ष की आयु में फार्म पर था, तब मैंने एक बछड़े को काटा था. मुझे लगा था कि एक फार्म पर एक कृषि श्रमिक होने के नाते यह मेरा कर्तव्य था कि मैं इस तरीके से खाने का प्रबंध करूं, लेकिन मुझे यह नहीं करना था! किसान यह कार्य स्वयं कर लेता, लेकिन मैंने इसे स्वेच्छा से किया था. उस समय मैं बहादुर बनना चाहता था और मजबूत दिखना चाहता था.....लेकिन मैं ऐसा नहीं था! मैं अपने इस कृत्य पर हमेशा पछताता रहा हूँ. क्या यह पाप था? रिक्की इन विचारों पर मनन करता रहा. एक और घटना थी, इस बार जब मैं नौ वर्ष का था. एक जंगली बिल्ली ने, जिसने उसके पडौसी के परित्यक्त तहखाने में रहना शुरू कर दिया था, बच्चे दिये थे. बिल्ली के बच्चों ने कुछ ऐसा खा लिया था जो सड़ा हुआ था और उससे सबको दस्त हो गये थे, जिससे बहुत भयंकर बदबू फ़ैल गई थी. उस समय, आइसलैंड में बिल्ली को मारने का एक आम तरीका था कि बिल्ली को एक पत्थर के साथ टाट के थैले में डाल कर नदी में फेंक दिया जाता था. इस समस्या के हल के बारे में अपने कुछ मित्रों के साथ बात करने के बाद, रिक्की ने निश्चय किया कि वह इस काम को करने के लिये उनका नेतृत्व करेगा, जिसे उसने अपने कुछ मित्रों की सहायता से किया. निश्चित ही यह एक पाप कर्म था? उसने अपने-आप में सोचा. लेकिन उस संस्कृति के सन्दर्भ में जो उस समय आइसलैंड में विद्यमान थी, बिल्लियों को कदाचित ही घर में पालतू जानवर की भान्ति रखा जाता था. एक कुत्ते को भी शहर की सीमा में एक पालतू जानवर की तरह रखना गैरकानूनी था, और पुलिस कुत्ते को देखते ही गोली मार देती थी. इन जानवरों के प्रति ये रवैया था कि उन्हें बाड़े में रखा जाना चाहिये : बिल्लियों को चूहे

पकड़ने के लिये और कुत्तों को भेड़ें हांकने के लिये. तो क्या मैंने उन बेचारे जानवरों को डुबा कर पाप किया था?

रिक्की सोचता रहा, फार्म पर, मुझे यह सिखाया था कि ऐसे पक्षियों का, जो अपने पंख टूटने के बाद इधर-उधर फडफडाते हुये पाये जाते थे, सिर काट देना उन पर दया करना था, सामान्यतया पानी की तार के अंदर उड़ कर चले जाने के बाद. यह उनके कष्ट को शीध्र ही समाप्त कर देता था. मैंने यह कई बार किया था. क्या यह पाप था?

मैं भेड़ों के बच्चों को चिन्हित करता था जिससे उनके छोटे-छोटे कानों में से खून बहता था. क्या यह पाप था? मैंने मछलियाँ पकड़ने के बाद उनका सिर पटक कर और उनके गले को चीर कर मारा. क्या यह पाप था? फार्म पर काम करते हुए, जब बूचड़खाने में भेड़ों को पकड़ कर गोली मारी जाती थी तो मैं उन्हें पकड़े रखने में सहायता करता था. क्या यह पाप था? मैंने विश्वविद्यालय में अपने पूर्व-स्नातक के दिनों में चुहिया और चूहों पर प्रयोग किये थे, जिससे ज्यादातर मौकों पर उनकी मृत्यु सुनिश्चित होती थी. क्या यह पाप था?

अब मुझे एक मक्खी मारने में भी परेशानी होती है! यह क्या हो गया है? ऐसा क्यों है? उस समय मैं इन कृत्यों को पाप नहीं मानता था. मुझे उनमें आनंद नहीं आता था, लेकिन यह मेरा कर्तव्य था, मेरी भूमिका थी. अब, मैं विश्वस्त नहीं हूँ. क्या यह 'विपरीत नैतिकता' थी.

जब वह इन अतीत की घटनाओं के बारे में सोच रहा था, उसे एहसास हुआ, कि सन्दर्भ बदल गया है. अब मैं अपना मांस स्थानीय कसाई की दुकान से खरीदता हूँ जिसने जानवर को मेरे सेवन के लिये आसानी से मारा है. मैं बीमार पशुओं को पशु-चिकित्सक के पास ले जाता हूँ जो उन्हें इच्छामृत्यु दे देते हैं, यदि उन्हें बचाया नहीं जा सकता तो. मैं अब इन सारी स्थितियों से बचता हूँ. यदि यह काम मुझे आज करने पड़ जायें तो मैं इन्हें अनैतिक मानूँगा; इसके बजाय, मैं इन हिंसात्मक कार्यों को दूसरों के करने के लिये छोड़ दूँगा. जब रिक्की ने इन घटनाओं के बारे में सोचा तो यह स्पष्ट हो गया कि जिसे पाप माना जाता है वह समय के साथ बदल जाता है और बदलता रहता है, जो सन्दर्भ पर निर्भर करता है.

रिक्की इसी लाइन पर सोचता रहा, अपने साथ इमानदार होने के लिये, कि मैं मानता हूँ कि जो मैंने पाप कर्म सच में किया था वह आठ वर्ष की आयु में था, जो मैंने अपने मिजाज के नखरों में के कारण किया था. मैंने अपनी माँ के द्वारा गर्व से सिये गए पर्दों को, जो बैठक की खिड़की पर लटके हुए थे, कैंची से थोडा सा काट दिया था. परदे सुंदर थे और मैं जानता था कि अगर मैंने उन्हें क्षति पहुंचाई तो मेरी माँ को चोट पहुंचेगी. जब माँ ने देखा कि मैंने क्या किया था तो वह रोई, लेकिन उसने मुझे डांटा नहीं. उस क्षण मुझे बहुत गहरा पश्चाताप हुआ और सच में मुझे अपराधी सा लगा था. अपने मस्तिष्क में, मैंने बहुत बुरा किया था, वास्तव में बहुत बुरा !

बहुत वर्षों के उपरान्त, उसके मरने से थोड़ा समय पहले, रिक्की ने उससे पूछा कि क्या उसे वह घटना याद थी. उसने उसे स्मरण करने में कुछ समय लिया और उत्तर दिया, "नहीं, मेरे प्रिय. मुझे परदे याद हैं. क्या तुमने उनमें छेद किया था?" वह सन्न रह गया और अपने-आप में सोचा, उसे इस घटना की कोई याद नहीं थी. मेरी माँ मेरे प्राथमिक पाप कर्म को याद नहीं कर सकती थी! अब उसका क्या अर्थ है?

रिक्की जानता था कि उसने पश्चाताप और अपराधबोध के बारे में उस दिन कुछ सीखा था और विस्मित था, क्या उसके लिये यह 'व्यवहारिक रूप से आवश्यक' था कि वह इतना बुरा काम करता, ताकि वह भावना या पश्चाताप की नकारात्मक भावना का अनुभव कर सके?

क्या पाप आवश्यक है?

वृद्ध आत्मा ने एक बार कहा था कि 'विरोधाभास' एक अनुभव लेने का आधार है, और उसने अवधारणा के बारे में कई अवसरों पर चर्चा की थी. परन्तु, अब जिस प्रश्न के बारे में रिक्की विस्मित हो रहा था, वह यह था कि विरोधाभास किस हद तक होना चाहिये ताकि कोई व्यक्ति समुचित नकारात्मक भावनाओं का अनुभव कर सके जिससे वह यह जान सके कि क्या आवश्यक था. जब वह उस निरंतरता के बारे में सोच रहा था जिसका निर्माण उसने एक छोर पर तो पुण्य और दूसरे छोर पर पाप से किया था, तो उसे यह लगा कि पुण्य एक 'व्यवहारिक रूप से आवश्यक' अंतिम बिंदु था, लेकिन, उसने सोचा, क्या यह भी 'व्यवहारिक रूप से आवश्यक' था कि वहाँ पाप भी हो? और उसी रूप से, क्या उदार होना संभव है यदि गरीबी न हो तो? क्या बहादुर होना संभव है यदि खतरा न हो तो? क्या धैर्य दिखाना संभव है यदि कष्ट न हों तो? क्या अच्छा होना संभव है यदि बुराई न हो तो? विरोधाभास के बिना, कोई अनुभव नहीं हो सकता. तो फिर क्या पाप का होना 'व्यावाहारिक रूप से आवश्यक' है, ताकि कि पुण्य हो सके. पाप के बिना क्या पुण्य हो सकता है?

रिक्की इसके बारे में जितना सोचता था, उसे उतना ही ज्यादा लगता था कि एक 'व्यावहारिक दृष्टिकोण' से निश्चय ही कष्ट होने चाहिये ताकि पुण्य रहे, और पुण्य के लिये कष्ट का होना आवश्यक है. लेकिन क्या इतना कष्ट होना चाहिये कि यह पाप बन जाये?, उसने अपने-आप में सोचा. क्या मनुष्यों द्वारा ऐसे कृत्य किये जाने चाहिये जो बहुत ज्यादा अनैतिक हैं, जैसे हत्या, अनुमोदित हत्या, लोगों में भेद-भाव और अपमान जिन्हें उनके मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को कम करने के लिये रूप-रेखा दी जाती है, और शरारती कृत्य जिनसे पीड़ा और कष्ट होता है? जो ऐसे वर्ग हैं जिन्हें उसने पाप का दर्जा दिया था. क्या यह पाप कर्म मनुष्यों को 'विरोधाभास' प्रदान करने के लिये होता है जिससे उन्हें एक ख़ास किस्म की नकारात्मक भावना का अनुभव करने का अवसर मिले जो उनके परिणाम स्वरूप होती है?

पाप का होना आवश्यक है ताकि अच्छाई
अपनी पवित्रता को इससे ऊपर साबित कर सके.

बुद्धा

यह स्पष्ट रूप से जटिल मुद्दे थे जिन पर बहुत विचार करने की आवश्यकता थी, लेकिन वह मूलभूत भी थे, न केवल वृद्ध आत्मा के आध्यात्मिक/अस्तित्ववादी दर्शन को समझने के लिये बल्कि उसके दर्शनशास्त्रीय दृष्टिकोण को स्वीकार करने के लिये भी.

उसे अपनी पहली मुलाकात याद आई जब वृद्ध आत्मा ने उससे कहा था कि जो आध्यात्मिक दृष्टिकोण वह उसे बतायेगी उसको धर्म के पीछे की एक कहानी या एक सामान्य कड़ी, जो सभी धर्मों के लिये आधारभूत है, की तरह देखा जा सकता है. और यदि, जैसा कि उसने कहा था, एक अवतरण मुख्य रूप से नकारात्मक भावनाओं का अनुभव करना और उनसे सीखना था, तो निश्चय ही इन नकारात्मक भावनाओं की अंतिम अभिव्यक्ति को समझना महत्वपूर्ण है, अर्थात जब वह उन कृत्यों के परिणाम स्वरूप अनुभव की जाती हैं जो पाप है.

जब रिक्की ने धर्मों और आध्यात्मिक दर्शनों के बारे में, जिनसे उसका परिचय हो चुका था, सोचा तो उसे ऐसा लगा कि वह लोगों को जीवन की अच्छाईयों पर केन्द्रित होने के लिये प्रोत्साहित करते हैं न कि पाप पर. जुडाईस्म ने सिखाया था कि ईश्वर सभी से प्रेम करता है और विश्व को कैसे सुधारें कि प्रत्येक व्यक्ति के लिये जीवन अच्छा हो. क्रिश्चियनिटी ने सिखाया था कि अगर तुम ईश्वर से प्रेम करोगे तो तुम बच जाओगे, और यह कि परमात्मा की ओर जाने वाले मार्ग में तुम्हे सहायता मिलेगी यदि तुम उसके पुत्र, जीसस, से प्रेम करोगे. इस्लाम ने सिखाया था कि अल्लाह ही है जो सब कुछ है और यह कि उसे समझने की ओर जाने वाले मार्ग में उसके सन्देशवाहक, मोहम्मद, के प्रति निष्ठा से सहायता मिलेगी. आधुनिक आध्यात्मिक दर्शन, इसी तरह से, पाप को अनदेखा करते हुए प्रतीत होते हैं, तुम्हे, उस क्षण, या अब के लिये, अपने परमानन्द पर केन्द्रित होने का निर्देश देते हुए, ताकि ज्ञानोदय हो सके.

यह धर्म इस स्पष्टीकरण पर, कि विश्व में पाप क्यों है, बेमन से ध्यान देते हुए लगते हैं, और इसके अलावा कुछ नहीं कहते कि पाप अच्छाई और बुराई के बीच के संघर्ष से पैदा होता है. और आधुनिक आध्यात्मिक दर्शन विश्व में जो पाप कृत्य होते हैं उनके लिये कोई स्पष्ट स्पष्टीकरण न देते हुए केवल एक ही पहलु को दर्शाते लग रहे थे. दूसरी और, वृद्ध आत्मा के आध्यात्मिक/अस्तित्ववादी परिदृश्य में जाओ, जिसने पाप को समाविष्ट करने का ढांचा पेश किया था. वृद्ध आत्मा ने सिखाया था कि आत्मा का प्राकृतिक घर आध्यात्मिक आयाम है, एक ऐसा संसार जिसमें प्रेम ही प्रेम व्याप्त है, जबकि आत्मा की अवतरण के दौरान मुख्य मंशा नकारात्मक भावनाओं के सम्पूर्ण क्षेत्र को अनुभव करना है जो, शायद, पाप में समाविष्ट हैं. और प्रत्येक अवतरण के बाद, आत्मा जो अनुभव प्राप्त करती है उस अनुभव के साथ आध्यात्मिक आयाम में वापिस घर आती है. इस तरीके से, पाप की घटनायें और उसके परिणाम स्वरूप पीड़ादायक भावनाएं जीवन का एक आवश्यक अंग लगती हैं.

जब रिक्की ने वृद्ध आत्मा के दर्शन पर मनन किया, तो उसने स्वयं को यह निष्कर्ष निकालते हुए पाया, हालांकि हिचकिचाहट से, कि मैं समझता हूँ कि पाप 'व्यावाहारिक रूप से आवश्यक' है ताकि हम नकारात्मक भावनाओं के सम्पूर्ण क्षेत्र का अनुभव कर सकें. आख़िरकार, यह केवल पुण्य की निरंतरता का विपरीत छोर है, और पुण्यरहित जीवन पूर्णतया कोई जीवन नहीं होगा. उसने अपने-आप में सोचा, मुझे वृद्ध आत्मा से इसके बारे में पूछना चाहिये.

क्रमशः...

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें